अध्याय 10

बुरे प्रभावों से अलग होना

अध्याय 9 के अनुसार परमेश्वर के लोगों के साथ एक नाजुक समस्या थी: अगुवों ने और सामान्य तौर पर लोगों ने "देश के लोगों" के साथ अन्तर्विवाह कर लिया था। कुछ अगुवों ने इस दुविधा के बारे में एज्रा को सूचित किया और उसने विलाप और प्रार्थना करते हुए जनसाधारण में यहूदा के पापों का अंगीकार करते हुए प्रत्युत्तर दिया। तब अध्याय 10 बताता है कि इस स्थिति में सुधार लाने के लिए क्या किया गया।

सुझाया गया उपाय (10:1-4)

[1]जब एज्रा परमेश्वर के भवन के सामने पड़ा, रोता हुआ प्रार्थना और पाप का अंगीकार कर रहा था, तब इस्राएल में से पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों की एक बहुत बड़ी मण्डली उसके पास इकट्ठी हुई; और लोग बिलख बिलख कर रो रहे थे। [2]तब यहीएल का पुत्र शकन्याह जो एलाम के वंश में का था, एज्रा से कहने लगा, "हम लोगों ने इस देश के लोगों में से अन्यजाति स्त्रियाँ ब्याह कर अपने परमेश्वर का विश्वासघात तो किया है, परन्तु इस दशा में भी इस्राएल के लिये आशा है। [3]अब हम अपने परमेश्वर से यह वाचा बाँधें, कि हम अपने प्रभु की सम्मति और अपने परमेश्वर की आज्ञा सुनकर थरथरानेवालों की सम्मति के अनुसार ऐसी सब स्त्रियों को और उनके बच्चों को दूर करें; और व्यवस्था के अनुसार काम किया जाए। [4]तू उठ, क्योंकि यह काम तेरा ही है, और हम तेरे साथ हैं; इसलिये हियाव बाँधकर इस काम में लग जा।"

आयत 1. अध्याय 9 में रिकॉर्ड की गई एज्रा की प्रार्थना ने लोगों के पापों के कारण उत्पन्न अपने निष्कपट शोक के प्रकटीकरण को प्रतिबिम्बित किया। उसने इस प्रकार का व्यवहार अध्याय 10 में जारी रखा: **एज्रा परमेश्वर के भवन के सामने पड़ा, रोता हुआ प्रार्थना और पाप का अंगीकार कर रहा था।**[1] इसका परिणाम पूर्व में ही बताया जा सकता था: **पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों** की एक **बहुत बड़ी** भीड़ एज्रा के चारों ओर **इकट्ठी** हो गई। **लोग** उसके शब्दों और कामों से प्रभावित किए गए थे और गहराई से हिला दिए गए थे। उसका शोक संक्रामक था। शीघ्र ही पूरी भीड़ के द्वारा रोना आरम्भ करने के कारण सब लोग **बिलख बिलख कर रो रहे थे।** इब्रानी पाठ्य अक्षरशः कहता है कि वे "बड़े विलाप के साथ रोए।"

आयतें 2, 3. उस बिन्दु पर **शकन्याह** आगे आया जिससे इस प्रकार का दुख उत्पन्न करने वाली समस्या का समाधान करने के लिए एक तरीका सुझा सके। उसे **यहीएल का पुत्र** बताया गया। "यहीएल" नाम का व्यक्ति उन अनाज्ञाकारी लोगों में सूचीबद्ध किया गया है जिन्होंने 10:26 में अपनी पत्नियों को निकाल दिया था। यह अनिश्चित है कि यहीएल, शकन्याह का पिता था या नहीं। जैसा "यहीएल" नाम एक सामान्य नाम था इसलिए इन दो पुरुषों के बीच का सम्बन्ध निश्चित नहीं है। अगर वह यहीएल, शकन्याह का पिता था तो शकन्याह के द्वारा यह सुझाए जाने में एक गहरा निश्चित दुख देखा जा सकता है कि जिन लोगों ने अन्यजाति-स्त्रियों से विवाह कर लिया था वे अपनी स्त्रियों को निकाल दें। क्या यह सम्भव है कि स्वयं शकन्याह इन मिश्रित विवाहों से जन्म लिया हुआ एक बालक था? कोई भी एक व्यक्ति यह अनुमान लगा सकता है कि शकन्याह का पिता उन यहूदियों में से एक था जिसने एक कनानी स्त्री, जो शायद जवान, सुन्दर अथवा धनवान थी, से विवाह करने के लिए अपनी यहूदी पत्नी (शकन्याह की माता) को तलाक दे दिया था (देखें मलाकी 2:10-16)।

शकन्याह, एज्रा के मूल्यांकन से सहमत था: "**हम लोगों ने इस देश के लोगों में से अन्यजाति स्त्रियाँ ब्याह कर अपने परमेश्वर का विश्वासघात तो किया है।**" उसने यह भी कहा लोगों के लिए अब भी आशा है अगर वे परमेश्वर से यह वाचा बाँधें, **कि ... ऐसी सब** [अन्यजाति] **स्त्रियों को और उनके बच्चों को दूर करें।** उसने कहा कि इस प्रकार का प्रबल कदम उठाना इस प्रकार का हो कि, "**कि हम अपने प्रभु की सम्मति और अपने परमेश्वर की आज्ञा सुनकर थरथरानेवालों**" करें। अनुवाद किया गया शब्द "अपने प्रभु" (אֲדֹנָי, *"अडोनय)* को परमेश्वर के लिए लागू किया जा सकता है फिर भी यह परमेश्वर (יהוה, *YHWH*, अथवा "यहोवा") का व्यक्तिगत नाम नहीं है जिसे प्रायः "प्रभु" (शब्दों में) बताया जाता है। शब्द *"अडोनय* - का प्रयोग पुराने नियम में - प्रायः थोड़े भिन्न स्वरों के साथ-मानवीय प्रभु अथवा स्वामी को आदर देने के लिए अथवा आदर के एक शीर्षक के रूप में किया जाता है। ऊपरी तौर पर, इस सन्दर्भ में, "अपने प्रभु" का प्रयोग एज्रा के सम्बन्ध में काम में लिया गया।[2] "अपने परमेश्वर की आज्ञा सुनकर थरथरानेवालों की सम्मति के अनुसार" का अर्थ यहूदियों के उस समूह से था जो व्यवस्था की कठोर व्याख्या और प्रयोग के विषय में एज्रा से सहमत थे और जिन्होंने इस कारण उसके द्वारा इस सुधार में सहयोग किया। ऐसा देखने को मिलता है कि एज्रा ने इस समस्या का निवारण करने के लिए पहले से ही एक तरीका बता दिया था और शकन्याह, एज्रा के विचार को स्वीकार करने के लिए अपनी तैयारी प्रकट कर रहा था।

शकन्याह ने यह प्रस्ताव रखा कि मिश्रित विवाहों का विघटन **व्यवस्था के अनुसार** किया जाना चाहिए। मिश्रित विवाहों कि समाप्ति किस प्रकार "व्यवस्था के अनुसार" हो सकती थी? राल्फ़ डब्ल्यु. क्लेन ने ये अवलोकन तैयार किए: (1) पंचग्रन्थ ने उन इस्राएलियों को तलाक के लिए आज्ञा नहीं दी जिन्होंने अन्यजातियों से विवाह कर लिया था। (2) इसने कनान के इस्राएल पूर्व निवासियों से आए हुए अन्यजातियों से विवाह करने के लिए मना किया (व्यवस्थाविवरण

7:1-4) और पुरुषों को अपनी उन पत्नियों से तलाक लेने की स्वीकृति दी जब उन्होंने उनमें "किसी प्रकार की निर्लज्जता" पाई (व्यवस्थाविवरण 24:1)। (3) जैसा "निर्लज्जता" शब्द को प्रायः लैंगिक अनैतिकता के रूप में समझा जाता है इसलिए शकन्याह ने इस शब्द की व्याख्या इन स्त्रियों के अन्यजाति स्वभाव को शामिल करने के लिए की। (4) अतः शकन्याह ने तलाक को नियमानुसार ठहराने (व्यवस्थाविवरण 24:1) के पद को कनानी लोगों से विवाह करने से मना करने वाले पद (व्यवस्थाविवरण 7:1- 4) के साथ जोड़ा जिससे वह अपने निष्कर्ष तक पहुँच सके।[3]

फिर भी यह याद रखा जाना चाहिए कि परमेश्वर प्राथमिक रूप से इन स्त्रियों का विरोध नहीं कर रहा था परन्तु इस सत्य के कारण विरोध कर रहा था कि वे अन्य देवताओं की पूजा कर रही थीं। अगर हम उस सच को भूल जाते हैं तब उस सिफ़ारिश को पाएँगे कि यहूदियों ने अपनी अप्रिय अन्यजाति स्त्रियों को निकाल दिया और सम्पूर्ण घटना को अरुचिकर पाएँगे।[4] पवित्रता की आवश्यकता ने यह अनिवार्य कर दिया कि अन्य लोगों से कुछ शारीरिक अलगाव रखा जाए परन्तु ध्यान का प्राथमिक बिन्दु आत्मिक अलगाव था-शेष भाग में ऐसे सम्बन्धों से दूर रहा जाए जो इस्राएलियों को अन्य देवताओं को पूजने में शामिल होने के लिए उनके साथ होने की ओर अगुवाई देते थे। अन्यजाति लोगों के साथ की वाचाओं में प्रवेश करने (व्यवस्थाविवरण 7:2) और विवाह सम्भावित रूप से अधिक बाँधने वाली वाचा थी (व्यवस्थाविवरण 7:3, 4) जिसकी यहूदियों को मनाही थी। अन्य देशों के लोगों का सदैव इस प्रकार स्वागत किया जाता था जिस प्रकार यहूदी विश्वास के प्रति यहूदी मत धारण करने वाले व्यक्ति का किया जाता था जिससे यह स्पष्ट है कि जाति की कोई समस्या नहीं थी।

आयत 4. शकन्याह ने एज्रा को यह याद दिलाते हुए उत्साहित किया कि **हियाव बाँधकर इस काम में लग** जाए क्योंकि यह **काम** उसी का है, उससे बलपूर्वक आग्रह किया कि वह इस सुधार में यहूदियों की अगुवाई करे। शकन्याह की सलाह ऐसी लगती है कि यह एज्रा के लिए और उसके विषय में उचित लगाव से उछल कर बाहर आयी है और यह एक उच्च आदर की गवाही देती है जिसमें एज्रा अपने ही देश के लोगों के द्वारा ग्रहण किया गया।

मण्डली के सम्मुख प्रस्तुत किया गया उपाय (10:5-11)

[5]तब एज्रा उठा, और याजकों, लेवियों और सब इस्राएलियों के प्रधानों को यह शपथ खिलाई कि हम इसी वचन के अनुसार करेंगे; और उन्होंने वैसी ही शपथ खाई। [6]तब एज्रा परमेश्वर के भवन के सामने से उठा, और एल्याशीब के पुत्र योहानान की कोठरी में गया, और वहाँ पहुँचकर न तो रोटी खाई, न पानी पिया, क्योंकि वह बँधुआई में से निकल आए हुओं के विश्वासघात के कारण शोक करता रहा। [7]तब उन्होंने यहूदा और यरूशलेम में रहनेवाले बँधुआई में से आए हुए सब लोगों में यह प्रचार कराया, कि तुम यरूशलेम में इकट्ठा हो; [8]और जो कोई हाकिमों

और पुरनियों की सम्मति न मानेगा और तीन दिन के भीतर न आए, उसकी समस्त धन-सम्पत्ति नष्ट की जाएगी और वह आप बँधुआई से आए हुओं की सभा से अलग किया जाएगा। 9तब यहूदा और बिन्यामीन के सब मनुष्य तीन दिन के भीतर यरूशलेम में इकट्ठा हुए; यह नौवें महीने के बीसवें दिन में हुआ; और सब लोग परमेश्वर के भवन के चौक में उस विषय के कारण और भारी वर्षा के मारे काँपते हुए बैठे रहे। 10तब एज्रा याजक खड़ा होकर उनसे कहने लगा, "तुम लोगों ने विश्वासघात करके अन्यजाति स्त्रियाँ ब्याह लीं, और इससे इस्राएल का दोष बढ़ गया है। 11इसलिये अब अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के सामने अपना पाप मान लो, और उसकी इच्छा पूरी करो, और इस देश के लोगों से और अन्यजाति-स्त्रियों से अलग हो जाओ।"

आयत 5. आवश्यक सुधार करने के लिए उठने और उसके अनुसार करने के लिए **एज्रा** ने शकन्याह का यह **वचन**[5] स्वीकार कर किया। स्पष्ट रूप से उसने तुरन्त उन लोगों को बुलाया जो उपस्थित थे - अर्थात उसने **याजकों, लेवियों और सब इस्राएलियों के प्रधानों को** बुलाया - अन्य शब्दों में, उसने यहूदी समुदाय के सब प्रतिनिधियों को बुलाया - और उनको **यह शपथ खिलाई** कि वे उसी **वचन के अनुसार करेंगे** जैसा शकन्याह ने सिफ़ारिश की थी। उन्हें विश्वास दिलाने के लिए लोगों ने **शपथ खाई**।

आयत 6. बहुत कुछ शेष था जिसे पूरा किया जाना था: यह आवश्यक था कि यहूदा के सम्पूर्ण प्रदेश के लोग इस सुधारवादी आंदोलन में शामिल हों। **एज्रा परमेश्वर के भवन के सामने से उठा, और एल्याशीब के पुत्र योहानान की कोठरी में गया**, अर्थात एक "कक्ष" (NIV) जो मन्दिर की एक तरफ़ से लगा हुआ था। सुलैमान के द्वारा पूर्व में निर्मित मन्दिर के रिकॉर्ड में इस प्रकार की कोठरियों का वर्णन किया गया है (1 राजा. 6:5, 6)।[6] कोठरियाँ उस समय भी निर्मित की गईं जब जरुब्बाबेल ने दूसरे मन्दिर का निर्माण किया क्योंकि वे खज़ानों के लिए (8:28, 29), अनाज, नए दाखमधु और टटके तेल के दशमांश (नहेम्य. 13:4-13) के लिए भण्डारगृहों के रूप में काम आते थे।

एक विवाद "योहानान" के विषय में उत्पन्न हुआ कि वह कौन था। इस कक्ष तक उसकी पहुँच यह अर्थ देती है कि वह एक याजक था और इस्राएल के प्रधानों में से एक था। यहाँ उसकी पहचान **एल्याशीब के पुत्र** के रूप में की गई है। नहेम्याह 12:23 भी "योहानान" के बारे में बताता है जिसे "एल्याशीब के पुत्र" के रूप में बताया गया है। कुछ विद्वान ऐसा मानते हैं कि यह साक्ष्य उपलब्ध करवाता है कि नहेम्याह की सेवकाई एज्रा की सेवकाई से भी आगे तक की रही। (वे अन्य साक्ष्य भी उद्धृत करते हैं जो जोसेफ़स और एलिफेंटाइन पिपरी में पाए गए हैं।) इन दो पुस्तकों में बताए गए योहानान को एक ही बताने के अनुमान के विरुद्ध अनेक तर्क उपलब्ध हैं। उपयुक्त रूप से "एल्याशीब" और "योहानान" दोनों अलग अलग पुरुष हैं जिनके नाम एक समान हैं। यह नोट किया जाना चाहिए कि एज्रा में दिए गए योहानान की पहचान महायाजक के रूप में *नहीं* की गई है जबकि एलिफेंटाइन

पिपरी और जोसेफ़स का योहानान एक महायाजक था। एच. जी. एम. विलियमसन ने निष्कर्ष निकाला कि योहानान का वर्णन एज्रा की दिनांक के प्रश्न के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखता।[7]

योहानान की कोठरी में एज्रा ने उपवास किया जहाँ उसने न तो **रोटी** खाई, न **पानी** पिया क्योंकि वह **बँधुआई में से निकल आए हुओं के विश्वासघात** के कारण शोक करता रहा। वाक्यांश **और वहाँ पहुँचकर** का अनुवाद "जब वह वहाँ आया" (NKJV) और जब "वहाँ पर था" (NIV) के रूप में भी किया जा सकता है। ये सारे अर्थ MT को प्रस्तुत करते हैं।[8]

आयतें 7, 8. आयत 7 के आरम्भ में व्यक्तिगत सर्वनाम **उन्होंने शब्द** यहूदा के प्रधानों के लिए आता है परन्तु यह एज्रा को भी शामिल कर सकता है। सम्भावित रूप से यहूदियों के प्रधानों ने योहानान की कोठरी में एज्रा से भेंट की और वहाँ से "उन्होंने" (एज्रा के साथ प्रधानों ने) यह **प्रचार** जारी किया।[9] सब यहूदियों को **यरूशलेम में ... तीन दिन के भीतर** इकट्ठा होना था। जैसा यहूदा का क्षेत्र बँधुआई से पूर्व के समय में छोटा था इस कारण यहूदी लोग यरूशलेम से लगभग पचास मील से अधिक की दूरी पर नहीं रहते होंगे। उन्होंने स्वयं के लिए यह सम्भव बनाया कि वे तीन दिन के भीतर यरूशलेम की ओर यात्रा कर सकें।[10] इस सभा में शामिल नहीं होने वाले लोगों की धन-सम्पत्ति नष्ट किए जाने और समुदाय से बहिष्कृत करने जैसे कड़े दण्ड की चेतावनी दी गई।

आयत 9. सम्पूर्ण प्रदेश ने यह प्रचार सुना और इस पर ध्यान दिया। **यहूदा और बिन्यामीन के सब मनुष्य** में वे लोग शामिल थे जो बेबीलोन से लौट कर आए थे (देखें 1:5; 4:1)। **नौवें महीने** के **बीसवें** दिन वे यरूशलेम में एज्रा के आगमन के लगभग $4^1/_2$ महीनों के पश्चात **यरूशलेम में इकट्ठा हुए** (9:1 पर टिप्पणियाँ देखें)। जब वे परमेश्वर के भवन के **चौक में** इकट्ठा हुए[11] तब दो कारणों से **काँपते हुए** इकट्ठा हुए: (1) **उस विषय के कारण**, अर्थात उनके द्वारा परमेश्वर की व्यवस्था तोड़ने में स्पष्ट अविश्वासयोग्यता की गम्भीरता, और (2) **भारी वर्षा** के मारे। इस सभा का आयोजन "नौवें महीने" (किसलेव) के अन्त में किया गया जो दिसम्बर के महीने में किसी एक समय पर रहा होगा। यह "वर्षा की ऋतु" के समय में रहा (10:13); वर्ष के इस समय में प्रायः यरूशलेम का मौसम ठण्डा और गीला रहता है। वर्षा में खड़े रहना अरुचिकर रहता था और इस कारण असुविधा महसूस होने के लिए उनके पास आत्मिक (अथवा भावनात्मक) और शारीरिक कारण दोनों थे।

आयतें 10, 11. जब लोग एकत्रित हो गए तब **एज्रा** ने उनके सम्मुख एक अगुवे, **याजक**, और शिक्षक के रूप में स्थान लिया जिससे यहूदियों के प्रधानों के द्वारा पहुँचे निर्णय की घोषणा की जा सके। उसकी सलाह के कारण वे उस निर्णय तक पहुँचे थे। मार्क ए. थ्रोन्टविट ने उचित रूप से नोट किया कि हालांकि समस्या में सुधार के लिए समुदाय ने ज़िम्मेदारी ली परन्तु फिर भी उस स्थिति पर एज्रा का ही नियन्त्रण था। उसने परमेश्वर के प्रति उनकी अनाज्ञाकारिता याद दिलाते हुए (10:10); और अपने पापों का अंगीकार करने के लिए उनसे बलपूर्वक आग्रह करते हुए (10:11), उन्हें विवश किया कि वे वायदा करें कि वे आगामी प्रस्ताव

को मानेंगे (10:5)। एक योग्य प्रशासक के रूप में उसने कुछ प्रधानों को यह अधिकार दिया कि वे इस योजना की पूर्ति का प्रबन्ध देखें (10:16)।[12]

एज्रा ने इस बात पर बल दिया कि यहूदी लोगों ने **अन्यजाति स्त्रियाँ** ब्याह लेने के द्वारा **विश्वासघात** किया है और इस प्रकार इस्राएल का **दोष** बढ़ा दिया। इस कारण उनके लिए आवश्यक है कि वे **परमेश्वर यहोवा के सामने** अपना पाप मान लें और **इस देश के लोगों से और अन्यजाति-स्त्रियों से अलग हो** जाने के द्वारा अपने मार्गों की गलतियों को सुधारें। अपनी अन्यजाति स्त्रियों से अलग होने का अर्थ था कि उन्हें निकाल दें अथवा उन पत्नियों को तलाक दे दें।

लोगों का प्रत्युत्तर (10:12-17)

[12]तब पूरी मण्डली के लोगों ने ऊँचे शब्द से कहा, "जैसा तू ने कहा है, वैसा ही हमें करना उचित है। [13]परन्तु लोग बहुत हैं, और वर्षा का समय है, और हम बाहर खड़े नहीं रह सकते, और यह दो एक दिन का काम नहीं है, क्योंकि हम ने इस बात में बड़ा अपराध किया है। [14]समस्त मण्डली की ओर से हमारे हाकिम नियुक्त किए जाएँ; और जब तक हमारे परमेश्वर का भड़का हुआ कोप हम से दूर न हो, और यह काम पूरा न हो जाए, तब तक हमारे नगरों के जितने निवासियों ने अन्यजाति स्त्रियाँ ब्याह ली हों, वे नियत समयों पर आया करें, और उनके संग एक नगर के पुरनिये और न्यायी आएँ।" [15]इसके विरुद्ध केवल असाहेल के पुत्र योनातान और तिकवा के पुत्र यहजयाह खड़े हुए, और मशुल्लाम और शब्बतै लेवियों ने उनकी सहायता की। [16]परन्तु बँधुआई से आए हुए लोगों ने वैसा ही किया। तब एज्रा याजक और पितरों के घरानों के कितने मुख्य पुरुष अपने अपने पितरों के घराने के अनुसार अपने सब नाम लिखाकर अलग किए गए, और दसवें महीने के पहले दिन को इस बात की तहक़ीक़ात के लिये बैठे; [17]और पहले महीने के पहले दिन तक उन्होंने उन सब पुरुषों की जाँच पूरी कर ली, जिन्होंने अन्यजाति-स्त्रियों से विवाह कर लिया था।

जब लोगों ने एज्रा का कथन सुना तब उसके निर्देश के अनुसार करने के लिए सहमत हो गए। फिर भी जिस प्रकार माँग की गई उसे पूरा करने के लिए उन्होंने अधिक समय माँगा।

आयत 12. एज्रा जो कह रहा था उसके साथ **मण्डली के लोगों ने** तुरन्त ऊँचे शब्द से सहमति जताई। उन्होंने अंगीकार किया कि इस विषय में आज्ञाकारी बनने के लिए उन्हें वैसा ही **करना उचित है** (अक्षरशः, "हमें [ऐसा] करना होगा")।

आयत 13. उनकी सहमति के बाद भी उपस्थित लोगों ने बल दिया कि इस समस्या के तुरन्त निवारण के रूप में वैसा करना असम्भव रहेगा। अनेक अपराधों के कारण यह कार्य **दो एक दिन में** पूरा नहीं किया जा सकता। साथ ही, जैसा यह **वर्षा का समय** था (10:9 पर टिप्पणियाँ देखें), उन्होंने कहा कि इस विषय पर उस स्थान में कार्य नहीं किया जा सकता जहाँ पर वर्तमान में वे सभा कर रहे थे।

आयत 14. इस कारण, **मण्डली** ने निवेदन किया कि उन्हें घर जाने दिया जाए और उनके **हाकिम उनकी** बात सुनें - अर्थात उन पुरुषों के मामलों को नियमित रूप से सुनें जिन्होंने **अन्यजाति स्त्रियाँ ब्याह ली**। ऊपरी तौर पर, दोषी पुरुषों के लिए वे **समयों** को नियत करें कि वे यरूशलेम आएँ और उनके साथ **नगर** के **पुरनिये और न्यायी** भी आएँ जिससे उनके मामले की जाँच की जा सके। इस पहुँच के अनुसार चलने के द्वारा लोगों ने इस्राएल **से परमेश्वर का भड़का हुआ कोप** दूर करने की आशा की।

आयत 15. लगभग सब उपस्थित लोगों ने इस योजना को स्वीकार किया। फिर भी चार पुरुषों के नाम बताए गए जो इसके **विरुद्ध** खड़े हुए[13]: **योनातान**, **यहजयाह**, **मशुल्लाम**, और **शब्बतै**। उनके विरोध का रिकॉर्ड (इस सत्य के साथ कि उनके नकारात्मक मत के कारण हम उनके बहिष्कार या दण्ड का कोई रिकॉर्ड नहीं पाते) संकेत देता है कि एक प्रकार की प्रजातान्त्रिक प्रक्रिया कार्यशील थी। एज्रा ने सिखाया, शकन्याह ने एक निवारण का प्रस्ताव रखा और उपस्थित लोग उस पर सहमत हुए। एज्रा ने तब सम्पूर्ण मण्डली के सम्मुख इसकी प्रक्रिया समझा दी और मण्डली को अपना मत चुनना था। इसका परिणाम इस प्रस्ताव के पक्ष में लगभग एकमत था; मात्र चार पुरुषों ने "नहीं" में अपना मत दिया परन्तु उनके पास अधिकार था कि उनका मत सुना जाए।

उनके विरोध का कारण बताया नहीं गया है। शायद शकन्याह के द्वारा व्यवस्था की व्याख्या से वे असहमत थे और उन्होंने सोचा कि अन्यजाति स्त्रियों को निकाला नहीं जाना चाहिए। अन्य सम्भावना यह है कि उनका यह मानना था कि जो उपाय किए गए वे बहुत ही नरम हैं, इस विषय पर तुरन्त कार्यवाही की जानी चाहिए और सब अन्यजाति स्त्रियों को तुरन्त निकाल देना चाहिए।

आयतें 16, 17. यह स्पष्टता के साथ बताया गया है: **परन्तु बँधुआई से आए हुए लोगों ने वैसा ही किया**। इब्रानी पाठ्य इन लोगों को "बँधुआई से आए हुए लोगों की सन्तान" (בְּנֵי הַגּוֹלָה, *बी'ने हग्गोलाह*) बताता है। कुछ नकारात्मक मतों के बाद भी लौट कर आए समूह के लोगों ने एक योजना का वहन किया जिस पर वे सहमत थे।

NASB के अनुसार, **एज्रा याजक और पितरों के घरानों के कितने मुख्य पुरुष** और यहूदी लोगों के द्वारा जिनकी पहचान लगभग बुद्धिमान और योग्य प्रधानों के रूप में की गई, **अलग किए गए**। फिर भी, इब्रानी पाठ्य अक्षरशः कहता है, "एज्रा याजक अलग किया गया और उसके साथ वे पुरुष ... ," जिससे ऐसा लगता है कि प्रश्न का बिन्दु रहे विवाहों की जिस जाँच के लिए उसने आज्ञा दी उस जाँच का भाग एज्रा भी था। NKJV इस दृष्टिकोण का समर्थन करती है: "एज्रा याजक, पितरों के घरानों के कितने मुख्य पुरुषों के साथ, पितरों के घराने के अनुसार अलग किए गए।" फिर भी, अन्य अनुवाद NASB के साथ सहमति रखते हैं।

जो पुरुष अलग किए गए उन्होंने **दसवें महीने के पहले दिन को** कार्य आरम्भ किया। यह यहूदियों का वर्षा में एकत्रित होने के लगभग दस दिनों के बाद और यह मामला एज्रा के ध्यान में लाने के लगभग दो सप्ताहों के बाद की बात है (10:1-

9)। अपनी जाँच पूरी करने में प्रधानों ने तीन महीने लिए। एज्रा के दल के द्वारा बेबीलोन छोड़ने के समय से एक वर्ष के बाद **पहले महीने के पहले दिन तक** उन्होंने उन सब पुरुषों की जाँच पूरी कर ली ... कर लिया था (7:9)।

यह नहीं बताया गया कि उनकी जाँच में क्या क्या शामिल था। शायद कुछ इस प्रकार घटित हुआ: जो पुरुष यह सोचते थे कि उनकी अन्यजाति पत्नियाँ हैं उनके लिए आवश्यक था कि वे जनसमूह के सम्मुख यरूशलेम में उपस्थित हों। उनके गाँवों और नगरों के प्रधान जाँच करने और उसकी गवाही देने के लिए उपस्थित थे। दोषी को यह स्वीकृति थी कि वे साक्ष्य प्रस्तुत करें कि उनकी पत्नियाँ अन्यजाति नहीं हैं परन्तु स्थानीय रूप से जन्म ली हुई हैं अथवा यहूदी मत धारण की हुई हैं। उनके नगरों के अन्य लोगों के पास यह अवसर था कि वे उनके दावों को प्रमाणित करें अथवा रद्द कर दें।[14] इसके बाद यरूशलेम के जनसमूह ने अपना निर्णय दिया। अगर किसी स्त्री का न्याय किए जाने के समय वह "विदेशी" अथवा "अन्यजाति" पत्नी के रूप में पायी गई तब उसके पुरुष के लिए आवश्यक था कि वह उसे उसके बच्चों के साथ निकाल दे।

दोषी लोगों की एक सूची (10:18-44)

[18]याजकों की सन्तान में से ये जन पाए गए जिन्होंने अन्यजाति-स्त्रियों से विवाह कर लिया था: येशू के पुत्र, योसादाक के पुत्र, और उसके भाई मासेयाह, एलीआज़र, यारीब और गदल्याह। [19]इन्होंने हाथ मारकर वचन दिया कि हम अपनी स्त्रियों को निकाल देंगे, और उन्होंने दोषी ठहरकर, अपने अपने दोष के कारण एक एक मेढ़ा बलि किया। [20]इम्मेर की सन्तान में से : हनानी और जबद्याह। [21]हारीम की सन्तान में से: मासेयाह, एलीयाह, शमायाह, यहीएल और उज्जियाह। [22]पशहूर की सन्तान में से: एल्योएनै, मासेयाह, इशमाएल, नतनेल, योजाबाद और एलासा। [23]फिर लेवियों में से: योजाबाद, शिमी, केलायाह जो कलीता कहलाता है, पतह्याह, यहूदा और एलीआज़र। [24]गवैयों में से: एल्याशीब; और द्वारपालों में से शल्लूम, तेलेम, और ऊरी। [25]इस्राएल में से परोश की सन्तान में: रम्याह, यिज्जियाह, मल्कियाह, मियामीन, एलीआज़ार, मल्कियाह और बनायाह। [26]एलाम की सन्तान में से: मत्तन्याह, जकर्याह, यहीएल, अब्दी, यरेमोत और एलियाह। [27]जत्तू की सन्तान में से: एल्योएनै, एल्याशीब, मत्तन्याह, यरेमोत, जाबाद, और अज़ीज़ा। [28]बेबै की सन्तान में से: यहोहानान, हनन्याह, जब्बै और अतलै। [29]बानी की सन्तान में से: मशुल्लाम, मल्लूक, अदायाह, याशूब, शाल और यरामोत। [30]पहतमोआब की सन्तान में से: अदना, कलाल, बनायाह, मासेयाह, मत्तन्याह, बसलेल, बिन्नूई और मनश्शे। [31]हारीम की सन्तान में से: एलीआज़ार, यिश्शियाह, मल्कियाह, शमायाह, शिमोन; [32]बिन्यामीन, मल्लूक और शमर्याह। [33]हाशूम की सन्तान में से: मत्तनै, मत्तत्ता, जाबाद, एलीपेलेत, यरेमै, मनश्शे, और शिमी। [34]बानी की सन्तान में से: मादै, अम्राम, ऊएल; [35]बनायाह, बेदयाह, कलूही; [36]बन्याह, मरेमोत, एल्याशीब; [37]मत्तन्याह, मत्तनै, यासू; [38]बानी, बिन्नूई, शिमी;

[39]शेलेम्याह, नातान, अदायाह; [40]मक्नदबै, शाशै, शारै; [41]अजरेल, शेलेम्याह, शेमर्याह; [42]शल्लूम, अमर्याह और योसेफ। [43]नबो की सन्तान में से: यीएल, मत्तित्याह, जाबाद, जबीना, यद्दो, योएल, और बनायाह। [44]इन सभों ने अन्यजाति स्त्रियाँ ब्याह ली थीं, और बहुतों की स्त्रियों से लड़के भी उत्पन्न हुए थे।

यह अध्याय और यह पुस्तक एक और सूची के साथ समाप्त होती है - इस बार उन लोगों की सूची थी जिन्होंने अपनी अन्यजाति पत्नियों को निकाल दिया था।

आयतें 18-44. लेखक ने इस भाग में सब नामों का रिकॉर्ड क्यों रखा? शायद उसने जिस कारण से अन्य लोगों के नाम शामिल किए उसी कारण से यह सूची शामिल की। इस प्रकार सूचियाँ प्रस्तुत करने के लिए उसकी रुचि अर्थात जिन घटनाओं की वह जानकारी दे रहा था उनमें शामिल लोगों के वास्तविक नाम प्रदान करना उस विवरण के ऐतिहासिक होने को प्रमाणित करने के प्रति उसके विशेष ध्यान की गवाही देता है। उसने सामान्य रूप से नहीं परन्तु चीज़ों को विशेष रूप में शामिल किया। ऐसा कहने के स्थान पर, "अनेक लोगों ने अंगीकार किया," उसने उनकी पहचान की जिससे पाठकों को सुनिश्चित किया जा सके कि वे घटनाएँ वास्तव में उत्पन्न हुईं।

यह सूची लगभग सौ पुरुषों के नाम के साथ है जिन्होंने अपनी **अन्यजाति-स्त्रियों** को निकाल दिया था।[15] हालांकि यह एक बड़ी संख्या है फिर भी जरुब्बाबेल के साथ बेबीलोन से यात्रा करके यरूशलेम आने वाले लोगों की सूची की तुलना में यह जनसंख्या का मात्र एक छोटा प्रतिशत (एक प्रतिशत से भी कम) लगता है (अध्याय 2)।[16] पूर्व में बताए गए मिश्रित विवाहों के विषय में बड़ी चिन्ता की दृष्टि से वह प्रतिशत किस प्रकार समझाया जा सकता है? ऊपरी तल पर अनेक सम्भावनाएँ देखी जा सकती हैं।

1. कुछ पत्नियों ने परमेश्वर के पीछे चलने का चुनाव कर लिया होगा। अन्य, जिन्होंने परिवर्तित होने से मना कर दिया उन्होंने अपने पतियों को विवश कर दिया होगा कि वे यहूदी समुदाय छोड़ दें।

2. यह सूची शायद मात्र एक प्रतिनिधि के रूप में हैं। ये पुरुष जिन्होंने अन्यजातियों को तलाक दे दिया था वे शायद, अपनी पत्नियों को निकाल देने वाले पुरुषों की कुल संख्या का मात्र एक नमूना रहे होंगे। जिन लोगों को सूचीबद्ध किया गया वे उच्च वर्ग के सदस्य रहे होंगे जिन्हें अन्यजाति स्त्रियों से अन्तर्विवाह का दोषी पाया गया होगा। अगर ऐसा है तो जो अन्य दोषी थे और जिन्होंने अपनी पत्नियों को निकाल दिया था परन्तु निम्न वर्ग के सदस्य थे वे इस सूची में शामिल नहीं किए गए।

3. हालांकि इस बड़ी संख्या ने अंगीकार किया और व्यवस्था का पालन किया तब भी अन्य अनेक लोगों ने ऐसा करने से मना कर दिया होगा। यह सुधार इस्राएल में मिश्रित विवाहों की समस्या को सुलझाने में मात्र औपचारिकता के साथ प्रभावी रहा होगा।[17] अगर ऐसा है तो जो नाम सूचीबद्ध किए गए वे लगभग एक सम्मान की सूची में रहे होंगे: सब दोषी लोगों में से मात्र ये पुरुष व्यवस्था को मानने और

जो शपथ उन्होंने ली थी उसे थामे रहने के इच्छुक थे।

चाहे जो भी हो, दी गई संख्या यह प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त रूप से महत्वपूर्ण है कि अन्तर्विवाह ने उस राष्ट्र की आत्मिक निष्ठा के प्रति एक उचित खतरे को प्रस्तुत किया। यहूदियों के अनेक हाकिमों के नाम बताए जाने के कारण, यह विशेष रूप से सच है। इन एक सौ से भी अधिक विवाहों से पाप आसानी से फ़ैल सकता था और सम्पूर्ण जाति को निगल सकता था।

यह सूची **याजकों की सन्तान में से** (10:18), **लेवियों में से** (10:23), **गवैयों में से और द्वारपालों में से** (10:24) और अन्य लोगों में से उन लोगों के नाम शामिल करती है जो इनमें से किसी पद पर नहीं थे परन्तु वे **इस्राएल में से** होने की पहचान रखते थे (10:25)। स्पष्ट रूप से अन्तर्विवाह की महामारी सम्पूर्ण इस्राएली समाज में फ़ैल चुकी थी।

दोषी याजकों के सम्बन्ध में पाठ्य कहता है कि **इन्होंने हाथ मारकर**[18] **वचन दिया कि हम अपनी स्त्रियों को निकाल देंगे, और, अपने अपने दोष के कारण एक एक मेढ़ा बलि किया** (10:19)। हालांकि वे शब्द याजकों के विषय में ही इस्तेमाल किए गए परन्तु ऐसा हो सकता है कि वे उन सब समूहों के लिए भी लागू होते हों जो इसी समान चल रहे थे।[19] सूचीबद्ध सब यहूदी पुरुषों ने अपनी अन्यजाति स्त्रियों से अलग होने के लिए इसी प्रकार हाथ मारकर वचन दिया और प्रत्येक ने अपने अपराध की क्षमा के लिए दोषबलि अर्पित किया।

अध्याय का अन्त इस सच्चाई को दोहराता है कि सूचीबद्ध पुरुषों ने **अन्यजाति स्त्रियाँ ब्याह ली थीं** और यह भी बताता है कि बहुतों की स्त्रियों से **लड़के भी उत्पन्न हुए थे** (10:44)। यहाँ पर इब्रानी पाठ्य का अर्थ कठिन है परन्तु यह शायद NASB के द्वारा अच्छी प्रकार से प्रस्तुत किया गया है। यह संस्करण स्पष्टता के साथ *नहीं* बताता कि पुरुषों ने इन पत्नियों को तलाक दे दिया और उन्हें और उनके बच्चों को अपने घराने से निकाल दिया। इसके अन्तर में 1 एस्द्रास 9:36 के विवरण से प्रभावित NRSV इसको अधिक सुनिश्चित करती है कि NASB में इसका अर्थ मात्र क्या है: "इन सभों ने अन्यजाति स्त्रियाँ ब्याह ली थीं और उनके लड़कों के साथ *उन्होंने उन्हें भेज दिया"* (प्रभाव जोड़े गए हैं)। अन्य संस्करणों ने इसी समान अनुवाद अपना लिए हैं (देखें NAB; NJB; NEB; REB; TEV; CEV)।

इस घटना का सबसे व्याकुल करने वाला पहलू, प्रत्यक्ष अन्याय के साथ इन पत्नियों को और उनके अनजान बच्चों को निकाल देने का है। पाठ्य यह नहीं बताता कि उनके साथ क्या हुआ। शायद ये पत्नियाँ अपने घरों की ओर लौट गईं जहाँ से आयी थीं और उनके बच्चे उनकी माताओं के घरानों में गोद ले लिए गए अथवा शायद जिन्होंने उन्हें निकाल दिया था उनके लिए यह आवश्यक रहा होगा कि उनके निरन्तर सहयोग के लिए वे किसी प्रकार का प्रबन्ध करें। एक प्रेरक लेखक के लिए महत्वपूर्ण बात यह थी कि मूर्तिपूजकों के साथ अन्तर्विवाह को- इस्राएल से साफ़ कर दिया गया।

एज्रा की पुस्तक, इस कारण बताती है कि किस प्रकार एक जाति के रूप में - परमेश्वर के लोगों के रूप में अपनी भूमि की ओर लौटने के द्वारा, परमेश्वर के

मन्दिर का पुनः निर्माण करते हुए और व्यवस्था का पालन करने के लिए स्वयं को पुनः समर्पित करने के द्वारा इस्राएल का पुनर्गठन किया गया।

अनुप्रयोग

जब कलीसिया पाप करे तब क्या किया जाना चाहिए (अध्याय 9; 10)

परमेश्वर की "कलीसिया"[20] के साथ एक समस्या थी; उसके लोगों ने पाप किया था! उन्होंने अविश्वासियों के साथ अन्तर्विवाह किया था, शायद फिर से ऐसा करने की शुरुआत भविष्य में पूरी तरह से स्वधर्म त्याग की ओर लेकर जाती। इस्राएल की समस्या का निवारण करने के लिए क्या किया जाना था? ऐसा हो सकता है कि इस प्रश्न के उत्तर में कुछ सुझाव रखे हुए हों जो मण्डली की समस्याओं को सुलझाने में वर्तमान के कलीसिया के प्रधानों की सहायता करें। अध्याय 9 और 10 के विवरण से हम देख सकते हैं कि कलीसिया में पाप की समस्या का निवारण करने के लिए दो कदम आवश्यक हैं।

पाप का अंगीकार करना और उसके लिए पश्चात्ताप करना। आइए जैसा एज्रा के दिन में बताया गया उसके अनुसार और तब कलीसिया के लिए यह जिस प्रकार लागू होता है उसके अनुसार अंगीकार करने और पश्चात्ताप करने की आवश्यकता पर ध्यान दें।

जब लोगों ने एज्रा को बताया कि "इस्राएली लोग" अपने पड़ोसी देशों के लोगों से "अलग नहीं हुए" परन्तु "उनकी बेटियों में से अपने और अपने बेटों के लिये स्त्रियाँ कर ली हैं" तब उसे इस पाप की जानकारी हुई (9:1, 2)। तब, जाति के लिए, एज्रा ने वस्त्र और बागे को फाड़ा, और अपने सिर और दाढ़ी के बाल नोचे और अपने हाथ अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फैलाकर किए गए पाप पर पश्चात्ताप करते हुए कहा कि इस्राएल के दोष बढ़ते बढ़ते आकाश तक पहुँचने के कारण परमेश्वर की ओर "[अपना] मुँह उठाते हुए उसे लाज आती है, और उसका मुँह काला है" (9:3-6)। एज्रा ने यह कहते हुए अपनी प्रार्थना जारी रखी कि इस्राएल अपरिवर्तनशीलता के साथ दोषी रहा है (9:7) और उनके पिछले दोषों के बाद भी उन पर परमेश्वर यहोवा का अनुग्रह हुआ है (9:8, 9)। तब उसने यह अंगीकार किया कि उन्होंने परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञा को तोड़ते हुए परमेश्वर की दया के प्रति कृतज्ञता की कमी प्रकट की है (9:10-13)। अगला, उसने कहा कि वे यह अपेक्षा कर सकते हैं कि परमेश्वर उन पर "यहाँ तक कोप करेगा जिस से वे मिट जाएँ और न तो कोई बचे और न कोई रह जाए" (9:14)। उसने यह कहते हुए समाप्ति की, "हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! तू धर्मी है, हम बचकर मुक्त हुए हैं जैसे कि आज वर्तमान है। देख, हम तेरे सामने दोषी हैं, इस कारण कोई तेरे सामने खड़ा नहीं रह सकता" (9:15)।

यह प्रार्थना अनेक कारणों से अनुकरणीय है: (1) एज्रा ने लोगों के पापी स्वभाव की पहचान की और परमेश्वर के अनुग्रह और दया के साथ उनके निरन्तर दोषों में अन्तर किया। (2) उसने कोई बहाने नहीं बनाए। (3) वह लोगों के साथ

जुड़ गया। उसने यह नहीं कहा, "हे परमेश्वर यहोवा, लोगों ने पाप किया है परन्तु मैं उसमें शामिल नहीं था; मुझे नहीं परन्तु उन्हें दण्ड दें।" हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि अविश्वासियों से विवाह करने वाले लोगों में एज्रा नहीं था परन्तु फिर भी उसने प्रथम पुरुष का प्रयोग करते हुए पश्चात्ताप किया: "*हम लोगों के* अधर्म के काम *हमारे* सिर पर बढ़ गए हैं ... *हम* बड़े दोषी हैं ... *हम ने* तेरी उन आज्ञाओं को तोड़ दिया है ... *हमारे* बुरे कामों और बड़े दोष ... *हम* तेरे सामने दोषी हैं" (9:6-15; प्रभाव जोड़े गए हैं)। क्यों? वह समुदाय का, मण्डली का भाग था और जब मण्डली ने पाप किया तब उसने स्वयं को उस परिस्थिति का एक भाग समझा; वह स्वयं को अपने भाइयों से अलग नहीं कर पाया। एज्रा के लिए यह "उनका अधर्म" और उनका दोष" नहीं था परन्तु "हमारा अधर्म" और "हमारा दोष," था।

एज्रा का धर्मी स्वभाव संक्रामक था; इसने लोगों को भी उसी समान सोच की ओर अगुवाई दी। इसके कारण *लोगों ने पश्चात्ताप किया और अपने अधर्म के लिए अंगीकार किया।* एज्रा 10:1 कहता है, "जब एज्रा परमेश्वर के भवन के सामने पड़ा, रोता हुआ प्रार्थना और पाप का अंगीकार कर रहा था, तब इस्राएल में से पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों की एक बहुत बड़ी मण्डली उसके पास इकट्ठी हुई; और लोग बिलख बिलख कर रो रहे थे।" इस कारण एज्रा की गतिविधियों ने ऐसा किया कि लोग अपने अधर्म से भरे व्यवहार की पहचान कर सकें और धर्मी शोक में अपने अधर्म से फिर जाएँ।

जब कलीसिया के सदस्य पाप करते हैं तब उस परिस्थिति में सुधार किए जाने से पहले यह आवश्यक है कि वे स्पष्टता के साथ अपने पाप से अवगत हों। तब उस पाप के लिए पश्चात्ताप करने और अंगीकार करने के लिए वे इच्छा रखें। अगुवे किस प्रकार पश्चात्ताप करने और अंगीकार करने के लिए सदस्यों को उत्साहित कर सकते हैं? इसके लिए अनेक विकल्प उपलब्ध हैं। उनमें से एक वह है जैसा हम प्रायः करते हैं कि इस विषय पर प्रचार किया जाए, पापियों को अपराधी ठहराया जाए, पश्चात्ताप करने के लिए उन्हें बुलावा दिया जाए और फिर आत्म सन्तुष्टि और स्व-धार्मिकता में बैठा जाए और प्रतीक्षा की जाए कि वे पश्चात्ताप करते हैं या नहीं।

शायद हमें, इसके स्थान पर, एज्रा के तरीके का प्रयोग करना चाहिए। "तुम्हारे पाप" और "तुम्हारे दोष" के साथ बात करने के स्थान पर "हमारे पाप" और "हमारे दोष" के साथ बात करते हुए हम स्वयं को पापियों के साथ जोड़ने के द्वारा आरम्भ कर सकते हैं। शायद हम उन बातों पर ध्यान दे सकते हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया है, उसने हमें कितना क्षमा किया है और हम सदैव कितने अयोग्य सिद्ध हुए हैं। शायद हमें उचित पश्चात्ताप और दुख प्रकट करना चाहिए कि हमारे लिए परमेश्वर इतना भला रहा है। इस सच के बाद भी परमेश्वर के लोग परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञाओं को तोड़ने में बहुत गहराई तक नीचे उतर गए हैं। तब हम "अपने" पापों के लिए - कलीसिया के पापों के लिए इतनी गम्भीरता और निष्ठा के साथ पश्चात्ताप कर पाएँगे कि सम्भावित रूप से मण्डली में अन्य लोगों को इसी प्रकार के पश्चात्ताप की प्रेरणा दे सकें।

पाप दूर करने के लिए कदम उठाएँ. अपने पाप पर पश्चात्ताप करने और उस

का अंगीकार करने के बाद मसीही लोगों के लिए आवश्यक है कि वे उस स्थिति में सुधार लाने के लिए कदम उठाएँ।

इस्राएल की समस्या का निवारण एज्रा के द्वारा नहीं दिया गया परन्तु एक अन्य प्रधान शकन्याह के द्वारा दिया गया। उसने सुझाया कि लोग "अपने परमेश्वर से यह वाचा बाँधें, कि हम अपने प्रभु की सम्मति और अपने परमेश्वर की आज्ञा सुनकर थरथरानेवालों की सम्मति के अनुसार ऐसी सब स्त्रियों को और उनके बच्चों को दूर करें; और [इस पर] व्यवस्था के अनुसार काम किया जाए" (10:3)। तब उसने एज्रा को उकसाया कि उठे और इस मामले में अगुवाई ले (10:4)। ऊपरी तौर पर उसने एज्रा को देखा कि वह दोष और लज्जा से इतना व्याकुल हो गया है कि वह शायद इस काम को स्वीकार नहीं कर पाएगा। शकन्याह द्वारा दिए उत्साह के कारण एज्रा उठा और उसने प्रधानों को यह शपथ खिलाते हुए काम आरम्भ किया कि वे यह देखें कि यह उपाय पूरा कर लिया गया है (10:5)।

इसके बदले में प्रधानों ने सबको सन्देश भेजा कि वे तीन दिनों के भीतर यरूशलेम में एकत्रित हों (10:7, 8)। जब सब लोग एक साथ थे तब एज्रा ने लोगों को चुनौती दी कि वे अपनी अविश्वासी पत्नियों से स्वयं को अलग करें (10:9-11)। उन्होंने सकारात्मक रूप से यह प्रत्युत्तर दिया कि वे ऐसा ही करेंगे परन्तु इस प्रकार करने के लिए उन्होंने समय माँगा (10:12-14)। एक भाग में, समय माँगा गया क्योंकि यह वर्षा का मौसम था और लोगों को यह अर्थहीन लगा कि जब तक जाँच और अलग किए जाने की प्रक्रिया चलती है तब तक वर्षा में खड़ा रहा जाए।

पाठ्य तब बताता है कि चार पुरुषों ने इस योजना का विरोध किया (10:15) मानो वे संकेत दे रहे हों कि सब पुरुषों के पास सहमत या असहमत होने का अवसर था। चार "नहीं" के मत का रिकॉर्ड संकेत देता है कि शेष सबने स्वयं की इच्छा से "हाँ" पर मत दिया।

काम की समाप्ति में तीन महीने लगे (10:16, 17)। 10:18-44 में हम उन लोगों के नामों की एक सूची पाते हैं जिन्होंने अपनी पत्नियों को निकाल दिया। जिन लोगों को सूचीबद्ध किया गया उन्हें हमें किस प्रकार देखना चाहिए? क्या उन्हें बड़े अपराधियों के रूप में देखा जाना चाहिए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी? इसके स्थान पर आइए उनकी पहचान पश्चात्ताप के उदाहरण के रूप में करें! उन्होंने दिखाया कि सच्चे पश्चात्ताप का अर्थ क्या है। शायद अन्य को भी अपनी पत्नियों को निकाल देना चाहिए था परन्तु उन्होंने ऐसा करने से मना कर दिया। इन पुरुषों ने वैसा ही किया जिसके लिए उनसे कहा गया क्योंकि वे परमेश्वर की आज्ञा को ग्रहण करने के लिए तैयार थे। उन्होंने अपने पाप की पहचान की, अपने पाप के लिए खेद प्रकट किया, अपने पाप पर पश्चात्ताप किया और परिस्थिति में सुधार के लिए जो आवश्यक था वह किया - हालांकि उस सुधार ने उनसे उनके जीवन में कुछ शक्तिशाली परिवर्तन की माँग रखी।

यह सम्भव है कि वर्तमान में कलीसिया में हमें किसी पापमय स्थिति में सुधार लाने के लिए, व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से किसी प्रकार के शक्तिशाली कदम उठाने पड़ें।

कलीसिया के रूप में हम इस विवरण को अपनी मण्डली से सम्बन्धित जीवन के लिए लागू कर सकते हैं। आइए प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में आसिया की सात कलीसियाओं के लिए यीशु के शब्दों को देखें: चार बार उसने विभिन्न मण्डलियों से कहा, "मन फिरा" (प्रका. 2:5, 16; 3:3, 19)। कलीसिया के द्वारा मन फिराने के लिए यह ऐसा हो जैसे देह मन फिराती है और अपने पाप का अंगीकार करती है; फिर भी, सदस्य भी कदम उठाएँ कि जो कुछ गलत है उसमें सुधार किया जा सके।

उदाहरण के लिए, कल्पना करें कि एक कलीसिया ने किसी गलती को थाम लिया और सबको वही सिखाया परन्तु इस बात को मानती है कि वे शिक्षाएँ गलत हैं। तब मण्डली को क्या करना चाहिए? मण्डली के सदस्यों को चाहिए कि वे इस सच्चाई का अंगीकार करें कि कलीसिया अब तक गलत सिखा रही थी। तब, वे सच्चाई सिखाना आरम्भ करें। (इस प्रकार के परिवर्तन का अर्थ ही मन फिराव है।) अन्त में, उन्हें अपनी ओर से उत्तम प्रयास करने चाहिए जिससे पूर्व की शिक्षा के बुरे प्रभावों को समाप्त किया जा सके।

व्यक्ति के रूप में एज्रा 10 में पाए जाने वाले उदाहरण को हम अपने जीवन में लागू कर सकते हैं। कभी-कभी पाप के लिए खेदित होना और उसका अंगीकार करना कठिन होता है। फिर भी उपयुक्त रूप से यह एक बड़ी चुनौती है कि पाप में शामिल परिस्थिति में सुधार करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएँ। एज्रा के दिनों में उन यहूदियों के लिए भी यह कठिन रहा होगा कि अपनी पत्नियों और बच्चों को निकाल दें। क्या वर्तमान में मसीही लोगों के द्वारा प्रभु की इच्छा पूरी करना कठिन नहीं है? आइए यीशु के शब्दों को देखें:

> यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहिनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता; और जो कोई अपना क्रूस न उठाए, और मेरे पीछे न आए, वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता (लूका 14:26, 27)।

नए नियम के समय में और इसके बाद की दो या तीन शताब्दियों में मसीही लोगों ने मसीह के लिए अपने परिवारों को, मित्रों को - वास्तव में स्वयं के जीवन को भी - त्याग दिया। एज्रा के दिनों में यहूदियों ने जो किया वह बहुत ही शक्तिशाली था परन्तु यीशु हमसे कहता है कि हम इससे भी अधिक शक्तिशाली बलिदान चढ़ाने के लिए इच्छा रखें!

मसीह के पीछे चलने के लिए हमें किस प्रकार की इच्छा रखनी चाहिए? हमें वह सब कुछ करने की इच्छा रखनी चाहिए जो आवश्यक हो - यहाँ तक कि आँख निकाल कर फेंकने या एक हाथ काट कर फेंकने जैसे पीड़ादायक कार्य करने की भी इच्छा रखें (मत्ती 5:29, 30)।

एज्रा का उदाहरण कलीसिया के अगुवों की भूमिका पर लागू किया जा सकता है जिनके पास कलीसिया के अन्तर्गत पाप की समस्या का समाधान करने की ज़िम्मेदारी होती है। इस उदाहरण से हम सीख सकते हैं कि, इससे पहले कि मण्डली

एक इकाई के रूप में काम करे, कलीसिया के अगुवों को चाहिए कि वे इस बात की खोज करें की सर्वसम्मति से एक राय होने का विकास किया जा सके। किसी समस्या के निवारण के विषय में निर्णय लेने के लिए अगुवे जितने अधिक लोगों को शामिल करेंगे उतनी ही उपयुक्तता के साथ सम्पूर्ण में मण्डली उस निवारण को स्वीकार कर पाएगी और उसमें भाग ले पाएगी।

कलीसिया के अगुवों को सदस्यों से कहने में हिचकिचाना नहीं चाहिए कि पाप को हटाने या पाप की क्षमा पाने के लिए अगर कठोर चुनाव करने की आवश्यकता हो तो वे ऐसा करें। जीवन और मरण के प्रश्नों के प्रति फीके प्रत्युत्तरों से लोगों को कोई लाभ नहीं होता।

अगुवों को लोगों के साथ धीरज रखना चाहिए और उचित निवेदनों का उत्तर सकारात्मक रूप से देना चाहिए जिस प्रकार यहूदी प्रधानों ने यहूदियों के द्वारा अपनी परिस्थिति को सँभालने के लिए अतिरिक्त समय के लिए किए गए उचित निवेदन का उत्तर स्वीकारात्मक रूप से दिया। जिन लोगों की अगुवाई का प्रयास अगुवे करते हैं उनके विषय में उतावले होने और अनुचित दिखाई देने से वे कुछ प्राप्त नहीं कर सकते और हो सकता है कि एक बड़े भाग में कुछ खो दें। हमें याद रखना चाहिए कि यीशु ने पापियों से प्रेम किया और हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

एज्रा की पुस्तक हमें दुखी और आनन्दित विचारों के साथ छोड़ती है: हमें यह जानकर दुख होता है कि यहूदा जाति, निर्वासन से यह पाठ सीखने के बाद, अब भी पाप कर रही थी। इससे भी दुखी विचार यह है कि पाप में सुधार करने के लिए परमेश्वर के लोगों के प्रधानों को सार्वजनिक रूप से नीचा किए जाने की आवश्यकता थी और उनकी पत्नियों को निकाल देने के लिए उनसे कहा गया।

दूसरी तरफ़, हम यह जानकर आनन्दित हो सकते हैं कि परमेश्वर के लोग परमेश्वर के वचन की माँग के प्रति अब भी संवेदनशील थे। वे मण्डली में पाप से व्यवहार करने के लिए इच्छुक थे कि इसे छोड़ सकें जिससे परमेश्वर की दृष्टि में फिर से सही ठहर सकें।

उपसंहार। परमेश्वर से भटक जाने की आदत के बारे में हम क्या कर सकते हैं? ऐसा कहा गया है कि "स्वतन्त्रता का मूल्य अनन्तता तक चौकसी करना है।"[21] शायद विश्वासयोग्यता का मूल्य अनन्तता तक चौकसी करना है - जिसमें स्वधर्म त्याग के निरन्तर खतरे की पहचान करने और जब कभी कलीसिया पाप करे तब मध्यस्थता करने के लिए तैयार रहना है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं के जीवन में पाप के प्रति अधिक संवेदनशील रहना चाहिए। हमें पाप की पहचान करनी चाहिए, पाप पर पश्चात्ताप करना चाहिए, पाप का अंगीकार करना चाहिए और पाप की क्षमा प्राप्ति के लिए जो कुछ आवश्यक हो वह करना चाहिए।

एक अगुवे के रूप में एज्रा (अध्याय 10)

एज्रा एक अगुवे का सर्वोत्तम उदाहरण उपलब्ध करवाता है। उसने कम से कम तीन सिद्धान्त प्रस्तुत किए जिसके अनुसार कलीसिया के अगुवे बन सकते हैं:

सर्वसम्मति से एक राय होने की खोज करें जब मण्डली में कठिन बातों में कार्य करने का प्रयास कर रहे हों।

सदस्यों से कहने में हिचकिचाएँ नहीं कि वे कठोर चुनाव करें जो पाप को हटाने के लिए अथवा क्षमा की प्राप्ति के लिए आवश्यक हों।

लोगों के साथ धीरज रखें और उचित निवेदनों का उत्तर सकारात्मक रूप से दें।

इसके साथ ही, एज्रा का काम वर्णन करता है कि कलीसिया का अगुवा कैसा होना चाहिए और वर्तमान में उसे क्या करना चाहिए:

एक आदर्श बनें जिसके पीछे अन्य सदस्य चल सकें; जैसा एज्रा ने आदर्श प्रस्तुत किया कि लोगों को इस्राएल के पाप पर किस प्रकार प्रतिक्रिया करनी चाहिए (10:1)।

एक शिक्षक बनें; मूर्तिपूजकों से विवाह करने की समस्या का शकन्याह के द्वारा समाधान सुझाने से पहले, जैसे एज्रा ने ऊपरी तौर पर लोगों को इस सच के बारे में सिखाया (10:1, 2)।

मण्डली से सलाह करें; जैसा एज्रा ने शकन्याह से सलाह ली (10:2-5)। वास्तव में अगर कोई सलाह अगुवे की ओर से आने के स्थान पर मण्डली में से आती है तो वे उपयुक्त रूप से स्वीकार की जाती हैं और उन पर कार्य किया जाता है।

एक प्रेरक बनें। एक अगुवे के काम में एक बड़ा भाग यह होता है कि वह लोगों को प्रेरणा दे कि वे परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के इच्छुक हों जाएँ।

ज़िम्मेदारी बाँटें और उस पर नियुक्ति दें। एज्रा ने अन्यजाति पत्नियों की समस्या के निवारण में ज़िम्मेदारी बाँटी। उसने एक समूह को नियुक्त करते हुए उन्हें ज़िम्मेदारी दी कि वे उनके सम्मुख प्रस्तुत किए गए अन्तर्विवाह के मामलों की जाँच करें (10:5-8)।

कभी कभी मात्र लोगों से यह माँग की जाती है कि वे परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करें (10:10, 11)। जब कलीसिया के अगुवे इस प्रकार का आदेश देते हैं तो उपयुक्त रूप से यह स्वीकार किया जाएगा अगर (शायद *तब ही* जब) उन्होंने पूर्व में बताई गई अन्य बातें पूरी की हैं - उदाहरण के लिए, अगर उन्होंने धर्मी आचरण का आदर्श प्रस्तुत किया हो, लोगों को शिक्षा दी हो और प्रेरणा दी हो, एक सर्वसम्मति का निर्माण करने की खोज की हो और कोई ज़िम्मेदारी बाँटी हो।

कलीसिया के अगुवों को चाहिए कि वे पौलुस के समान बनें जो "सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना" (1 कुरि. 9:22)। उन्हें उस बुद्धि की आवश्यकता है जो मात्र परमेश्वर दे सकता है जिससे यह समझा जा सके कि किसी निश्चित समय में किसी निश्चित परिस्थिति पर किस बात की आवयश्कता है।

समाप्ति नोट

[1]7:27-8:34 और 9:1-15 ("एज्रा की जीवनी") में एज्रा ने प्रथम पुरुष में कहा; 10:1 पर फिर से तृतीय पुरुष द्वारा वर्णन किया जाना आरम्भ हो जाता है. [2]कुछ टीकाकार ऐसा मानते हैं कि इस आयत में "प्रभु" शब्द प्रभु परमेश्वर की ओर संकेत देता है। (एड्विन एम. यमौची, "एज्रा-नहेम्याह," इन *द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेन्ट्री*, वोल. 4, *1 राजा-अय्यूब*, एड. फ्रेंक ई. गेबलाइन [ग्रैंड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन पब्लिशिंग, 1988], 669.) चाहे "प्रभु" शब्द एज्रा की ओर संकेत करता है या प्रभु परमेश्वर की ओर, फिर भी इस पद का अर्थ एक समान है क्योंकि तुरन्त प्रभाव में, एज्रा की सलाह प्रभु परमेश्वर की ही सलाह रही होगी. [3]राल्फ़ डब्ल्यु. क्लेन, "द बुक्स ऑफ़ एज्रा & नहेम्याह," इन *द न्यु इन्टरप्रिटर्स बाइबल*, एड. लिएन्डर ई. केक (नाशविल्ले: एबिंगडन प्रेस, 1999), 3:741. [4]एच. जी. एम. विलियमसन ने, उदाहरण के लिए, लिखा, "मिश्रित विवाहों की समस्या को एज्रा ने किस प्रकार सँभाला इसके बारे में इन दो अध्यायों में बताया गया उपाय, अगर सम्पूर्ण [पुराने नियम] में आकर्षक नहीं है तब भी कम से कम एज्रा-नहेम्याह के भागों में आकर्षक है" (एच. जी. एम. विलियमसन, *एज्रा, नहेम्याह*, वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वोल. 16 [वाको, टेक्सास: वर्ड बुक्स, 1985], 159)। [5]शकन्याह ने एक "वचन" (דָּבָר, *डाबर)* प्रस्तुत किया जिसका अक्षरशः अर्थ "शब्द" अथवा "बात" (देखें KJV) है। [6]मन्दिर के पुनः निर्माणों के लिए और कोठरियों के एक विवरण के लिए, *द ऐंकर बाइबल डिक्शनरी*, एड. डेविड नोएल फ्रीडमेन (न्यु योर्क: डबलडे, 1992), 6:356-58 में देखें केरोल मेयर्स, "टेम्पल, जरुसलेम।" [7]विलियमसन, 151-54. [8]अन्य संस्करणों में पाया जाने वाला पठन "जहाँ उसने रात बितायी" (RSV; NRSV; NAB; NJB; ESV) है जिसका समर्थन 1 एस्द्रास 9:2 के पाठ्य के द्वारा किया गया है। MT के एक हल्के संशोधन के द्वारा भी यह पठन उत्पन्न किया जा सकता है। अगर यह सही है, "एज्रा ने उपवास और शोक करते हुए योहानान की कोठरी में रात बितायी" (राल्फ़ डब्ल्यु. क्लेन, "एज्रा," इन *हार्पर्स बाइबल कमेन्ट्री*, एड. जेम्स एल. मेय्स [सेन फ़्रान्सिसको: हार्पर रो, 1988], 378)। [9]अधिकतर टीकाकार ऐसा मानते हैं कि एज्रा ने प्रधानों को स्वयं निर्णय लेने के लिए छोड़ते हुए अकेले में उपवास रखा। उदाहरण के लिए, सी. ई. डिमारे ने लिखा, "[एज्रा], याजकीय वर्ग के एक पुरुष [योहानान] नाम के एक व्यक्ति के व्यक्तिगत निवास स्थान की ओर अकेले ही बढ़ा और वहाँ उसने उपवास किया और निसन्देह परमेश्वर के निश्चित दिशा निर्देशन के लिए परमेश्वर से प्रार्थना में अनेक घण्टे बिताए" (सी. ई. डिमारे, "द बुक ऑफ़ एज्रा," इन *बीकन बाइबल कमेन्ट्री*, वोल. 2, *जोशुआ थ्रू एस्तेर* [कन्सास सिटी, मिसौरी: बीकन हिल प्रेस, 1965], 626)। [10]यमौची, 670.

[11]"चौक" सम्भवतः "मन्दिर के आँगन के दक्षिणपूर्वी कोने के पास जलफाटक के सामने एक खुला स्थान "रहा होगा" (जॉन सी. विट्कूम्ब, जुनियर, "एज्रा," इन *द विक्लिफ़ बाइबल कमेन्ट्री*, एड. चार्ल्स एफ़. फ़ेफ़र एन्ड एवरेट्ट एफ़. हैरिंगसन [शिकागो: मूडी प्रेस, 1962], 431-32)। देखें नहेम्याह 3:26; 8:1. [12]मार्क ए. थ्रोन्टविट, *एज्रा-नहेम्याह*, इन्टरप्रिटेशन (लूसविल्ले: जॉन नोक्स प्रेस, 1992), 55. [13]KJV में "को धारण किए हुए है," परन्तु NKJV सहित अन्य संस्करणों में "विरोध किया", है ASV इब्रानी पाठ्य का अक्षरशः अनुवाद "के विरोध में खड़े हो गए" के रूप में करता है. [14]किसी पुरुष की तुलना में स्पष्टता के साथ यह पहचान करना अधिक कठिन था कि कोई स्त्री उचित रूप से यहूदी मत धारण की हुई है (क्योंकि यहूदी मत धारण करने वाले पुरुष का खतना किया जाता था)। अगर किसी स्त्री पर "विदेशी" अथवा "अन्यजाति" होने का दोष होता था परन्तु इसके लिए वह मना करती थी तो निश्चित रूप से अन्य लोगों से पूछा जाता होगा कि क्या वह स्त्री किसी मूर्ति को पूजती है। [15]विभिन्न संस्करण कुछ अलग संख्या बताते हैं MT के अनुसार, NASB, 113 पुरुषों के नाम उपलब्ध करवाती है जिन्होंने अन्यजाति स्त्रियाँ ब्याह ली. NIV इस संख्या में दो अंक कम करते हुए इसे 111 बनाती है इसने एज्रा 10:38 (और 1 एस्द्रास 9:34) में LXX के पठन को अपना लिया है. अपराध करने वालों में "बानी" और "बिन्नूई" के स्थान पर NIV इसे "बिन्नूई के [पुत्र] वंशज" पढ़ती है 10:40 "अज्जूर के पुत्र" अथवा "जक्कै के पुत्र" पढ़ने के स्थान पर "मक्नदबै" नाम में संशोधन करने के द्वारा इस संख्या को आगे 110 तक घटाया जा सकता है (क्लेन, "द बुक्स

ऑफ़ एज्रा & नहेम्याह," 745, एन. 105; देखें NJB). [16]क्लेन के अनुसार, (अध्याय 2 के आँकड़ों के आधार पर) ये संख्याएँ "पुरोहित वर्ग का 0.58 प्रतिशत और जनसाधारण का 0.67 प्रतिशत अथवा 0.68 प्रतिशत" का प्रतिनिधित्व करती हैं (उपरोक्त, 745)। [17]अगर ऐसा था तो यह बताने में सहायता करेगा कि तेरह वर्ष पश्चात नहेम्याह को उसी समान समस्या से व्यवहार करने की आवश्यकता क्यों पड़ी इस स्थिति के पक्ष में एक तर्क यह है कि किसी गैर इस्राएली से विवाह करने पर स्वयं व्यवस्था ने किसी प्रकार के दण्ड (जैसे कि मृत्यु का दण्ड अथवा बहिष्कृत करने) का प्रस्ताव नहीं रखा था। (अध्याय 10 के आरम्भ में बताए गए जुर्माने वे दण्ड थे जो सभा में उपस्थित नहीं होने के लिए थे, न कि अन्तर्विवाह के लिए।) इस्राएल के सम्पूर्ण इतिहास से, इसके पुरुषों ने बिना कोई दण्ड पाए अन्यजाति पत्नियाँ ब्याह ली (जबकि पूरी जाति को इन विवाहों के कारण लगातार कष्ट उठाना पड़ा). [18]"हाथ मारकर वचन दिया" अक्षरशः "अपना हाथ दिया," है। [19]जेकब मिलग्रोम, *कल्ट एन्ड कोन्शन्स: द अशम एन्ड द प्रिस्ट्ली डॉक्ट्रीन ऑफ़ रिपेन्टेन्स* (लीडेन: ब्रिल, 1976), 73. [20]"कलीसिया" शब्द का प्रयोग यहाँ पर परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों की ओर संकेत करने के लिए किया गया है जिनका उस समय में परमेश्वर के साथ उसी समान सम्बन्ध था जैसा वर्तमान में कलीसिया का परमेश्वर के साथ है। पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों को कभी कभी "मण्डली" अथवा "लोग" के रूप में बताया गया है, ये ऐसे शब्द हैं जो नए नियम में "कलीसिया" (ἐκκλησία, *इक्क्लिसिया)* के लिए यूनानी शब्द के अर्थ के साथ बहुत कठिनाई के साथ ही समानता रखते हैं।

[21]प्रायः थोमस जेफ़्फ़रसन को इस कथन का कारण बताया गया जबकि इसका मूल स्रोत अज्ञात है। जॉन फ़िलपोट कुर्रन (1750-1817) ने 10 जुलाई, 1790 को "चुनाव के अधिकार पर अपने भाषण" में कहा, "जिस परिस्थिति में परमेश्वर ने मनुष्य को स्वतन्त्रता दी है वह अनन्त चौकसी है" (जॉन बर्टलेट्ट, *बर्टलेट्ट्स फ़ेमिलियर कोटेशन्स,* 16वाँ संस्करण, एड. जस्टिन कप्लान [बोस्टन: लिटिल, ब्राऊन, एन्ड कं., 1992], 351)।